## विचार बिन्दु

**क्रोध में मनुष्य अपने मन की बात नहीं कहता, वह केवल दूसरों का दिल दुखाना चाहता है। -प्रेमचंद**

# कोचिंग संस्थानों की मनमानी पर लगाम और सुरक्षा मानकों की जांच जरुरी

कुकुरमुत्तों की तरह देश में पैदा हो रहे कोचिंग संस्थानों के बारे में समय-समय पर जो जानकारी मिल रही है वह निश्चय ही भयावह है। एक रिपोर्ट के अनुसार भारत में 70 हजार से ज्यादा कोचिंग सेंटर हैं, इनमें स्कूल एजुकेशन से लेकर जेईई, नीट और यूपीएससी परीक्षा आदि की तैयारी करवाई जाती है। ज्यादातर अभिभावक छोटी क्लासेस से ही बच्चों को कोचिंग भेजना शुरू कर देते हैं। बहुत से लोगों ने मान लिया है कि कोचिंग भेजे बिना उनका बच्चा क्लास में पास नहीं हो पाएगा। इस चक्कर में वो कोचिंग का इंफ्रास्ट्रक्चर या शिक्षकों की योग्यता तक चेक नहीं करते हैं। देश के किसी कोचिंग सेंटर में कोई हादसा हो जाने पर उनका ध्यान इन चीजों की तरफ जाता है। वर्ष 2024 में कोटा, दिल्ली, जयपुर, कानपुर समेत कई शहरों में स्थित कोचिंग सेंटर्स में हुए हादसों ने लोगों को सोचने पर मजबूर कर दिया।

बच्चों के भविष्य को लेकर झूठे वादे करके हजारों-लाखों रुपये वसूलने वालों के खिलाफ कार्रवाई करने के लिए सरकार ने बाकायदा दिशानिर्देश जारी कर दिए हैं। उपभोक्ता मामलों के केंद्रीय मंत्री बीएल वर्मा ने संसद में बताया कि केंद्रीय उपभोक्ता संरक्षण प्राधिकरण (ण्ण्ईं) ने भ्रामक विज्ञापन के लिए 45 कोचिंग सेंटरों को नोटिस जारी किए हैं, 19 कोचिंग संस्थानों पर 61,60,000 रुपये का जुर्माना लगाया है। इन कोचिंग सेंटर को भ्रामक विज्ञापन और अनुचित व्यापार प्रथाओं को बंद करने का निर्देश दिया है। इतना ही नहीं विभिन्न कोचिंग सेंटरों द्वारा अनुचित व्यवहार, विशेषकर छात्रों/अभ्यर्थियों की नामांकन फीस वापस न करने के संबंध में राष्ट्रीय उपभोक्ता हेल्पलाइन में दर्ज की गई अनेक शिकायतों के बाद, राष्ट्रीय उपभोक्ता हेल्पलाइन (ण्ण्) ने प्रभावित छात्रों को कुल 1.15 करोड़ की राशि वापस करने की सुविधा प्रदान करने के लिए मिशन-मोड पर इन शिकायतों को हल करने के लिए एक अभियान शुरू किया।

राजस्थान की बात करे तो राजधानी जयपुर में रविवार को उत्कर्ष कोचिंग संस्थान में स्टूडेंट्स के बेहोश होने की घटना के बाद नियमों को ताक पर रख चलाए जा रहे कोचिंग संस्थानों की आंतरिक व्यवस्था और सुरक्षा मानको को लेकर सवाल खडे हो रहे हैं। प्रदेशभर से मिली जानकारी के मुताबिक सैकडों कोचिंग सेंटरों में न तो अग्निशमन की उपयुक्त व्यवस्था है और ना ही दूसरी जरुरी सुविधाएं। विभिन्न गली मुहल्लों में कहीं एक कमरा तो कहीं दो कमरा में कोचिंग सेंटर चल रहे है। ऐसे कोचिंग संचालकों को न तो छात्रों की चिंता है और ना ही अधिकारियों का भय। इन कोचिंग संस्थानों के पास अच्छे उपस्कर, पर्याप्त रोशनी, पेयजल व्यवस्था, शौचालय की सुविधा, स्वच्छ वातावरण, अग्निशमन की व्यवस्था, आकस्मिक चिकित्सा और पार्किंग सहित अन्य सुविधाएं भी नहीं है। कोचिंग स्थलों की बदहाली के लिए संचालकों के साथ अभिभावक भी जिम्मेदार है। अपने खून पसीने की कमाई से माँ-बाप अपने बेटे-बेटी का भविष्य सँवारने का कार्य करते है। कोचिंग संस्थान में भर्ती करने से पहले उसकी सुख-सुविधा को भी देखा जाना चाहिए। यह भी देखा जाना चाहिए की भवन निर्माण की दृष्टि से ठीक है या नहीं। बिजली व्यवस्था कैसी है। भवन के ऊपरी स्थल तक सुविधा पूर्वक जाया जा सकता है या नहीं। सब से महत्त्वपूर्ण यह है आपात स्थिति में बच्चों के बाहर निकलने की व्यवस्था कैसी है। जब आप पूरी तरह संतुष्ट हो जावे तभी अपने बच्चे को कोचिंग में भेजे। केवल पढाई का स्तर ही नहीं जांचे साथ में अन्य व्यवस्थाओं का जायजा लेना जरुरी है ताकि कोई भी अनहोनी को रोका जा सके।

छात्राओं के अचानक बेहोश होने के मामले में जयपुर ग्रेटर नगर निगम ने बड़ी कार्रवाई की है। उत्कर्ष कोचिंग संस्थान की बिल्डिंग को ग्रेटर नगर निगम की टीम ने सील किया है। वहीं की टीम ने यहां के सीवरेज से पानी का सैंपल भी लिया है। बताया जा रहा है कि इस मामले में ग्रेटर नगर निगम ने 6 अधिकारियों की एक जांच कमेटी बनाई है। इस घटना के बाद एक बार फिर कोचिंग संस्थान के नियमन से जुड़े बिल की चर्चा तेज हो गई है। इस बिल को पेश किए जाने की बात पिछले 2 साल से की जा रही है। इसके 2 ड्राफ्ट भी तैयार हो गए हैं, लेकिन अभी तक इसे सदन में पेश नहीं किया गया है। भजनलाल सरकार के गठन के बाद फिर से कोचिंग संस्थानों पर लगाम कसने की बात कही गई थी, मगर अब तक इस दिशा में कोई प्रगति नहीं हुई। बताया जाता है इस ड्राफ्ट में मनमानी फीस वसूली रोकने, सुरक्षा व्यवस्था सुनिश्चित करने, डॉक्टर एवं काउंसलर की उपलब्धता सुनिश्चित करने पर जोर दिया गया है। ड्राफ्ट के मुताबिक, अगर कोई विद्यार्थी कोर्स के बीच में कोचिंग छोड़ना चाहता है तो उसे सत्र के बचे हुए समय के हिसाब से फीस वापस कर दी जाएगी।

**राज्यभर में कोचिंग संसथान रेलवे के गैंगमैन से लेकर आईएएस अफसर बनाने तक का सपना छात्रों को दिखाता है। अंडर ग्रेजुएट, ग्रेजुएट से लेकर यूपीएससी, स्टेट पीएससी, एसएससी, रेलवे, बैंकिंग, मैनेजमैंट, क्लर्क आदि की प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कराने के अलावा कंप्यूटर कोर्स और इंगलिश स्पीकिंग कोर्स कराने के नाम पर भी कोचिंग संचालक चांदी काट रहे हैं। कोचिंग संस्थानों पर सरकार और कानून का कोई अंकुश ही नहीं है।**

विद्यार्थियों का कहना है कि अगर एडमिशन लेने के बाद उन्हें लगता है कि यहां सुरक्षा व्यवस्था पर्याप्त नहीं है। अगर सुविधाएं ठीक नहीं हैं तो भी वे वहीं पढ़ने को मजबूर होते हैं, क्योंकि संस्थान उन्हें फीस वापस नहीं करता। अगर यह बिल आ गया होता तो विद्यार्थियों को इन दिक्कतों का सामना नहीं करना पडता। अब इस मामले में राज्य मानवाधिकार आयोग ने सख्ती दिखाई है। आयोग अध्यक्ष जस्टिस जी.आर. मूलचंदानी ने मुख्य सचिव, पुलिस महानिदेशक, पुलिस कमिश्नर, जिला कलेक्टर और नगर निगम आयुक्त को नोटिस भेजकर 15 जनवरी तक रिपोर्ट पेश करने को कहा है। आयोग ने कोचिंग सेंटर में छात्रों के स्वास्थ्य को सुरक्षित व संरक्षित रखने के लिए भी निर्देश जारी किए।

राजधानी में अनेक ऐसे बिना सक्षम मंजूरी और कन्वर्जन के चलने वाले कोचिंग संस्थानों और होटलों ने लोगों का सुख-चैन छीन लिया है। प्रदेश की राजधानी इस समय किसी बडी दुर्घटना के मुहाने पर बैठी है। बिना किसी अत्यावश्यक सुविधा के चलने वाला यह व्यवसाय जिस प्रकार संचालित हो रहा है वह शासन-प्रशासन के लिए चुनौतीपूर्ण है। राजधानी जयपुर सहित प्रदेशभर में इन दिनों कोचिंग संस्थानों और होटल व्यवसाय की बाढ़ सी आ गयी है। लगता है किसी को कोई धंधा नहीं मिले तो ये धंधे तो लाभकारी है ही। इसके लिए किसी की मंजूरी की जरुरत नहीं है। बस सम्बद्ध अधिकारियों की मुट्ठी गरम करो और फिर किसी कानून कायदे की जरुरत नहीं है। राजधानी में इनका लम्बा जाल फेल गया है। रिहायसी इलाकों में जहाँ देखो आपको कोचिंग और होटल देखने को मिल जायेंगे। बडी संख्या में छात्र इन दोनों के इर्द-गिर्द देखे जा सकते है। कोचिंग संस्थानों की हालत तो यह है यहाँ बच्चों की सुरक्षा की किसी को कोई परवाह नही है। यहाँ तक की अभिभावक भी बेपरवाह है। फायर सिस्टम कहीं नहीं है। यही स्थिति जयपुर की है जहाँ गली-गली और सडकों पर कोचिंग खुल गए है। पार्किंग भी कहीं नहीं है और हर समय दुर्घटना का आदेश बना रहता है। राजधानी के गोपालपुरा से गुर्जर की थडी वाली रोड पर दर्जनों कोचिंग संस्थान है जिनके कारण हर समय ट्रैफिक व्यवस्था अस्त-व्यस्त रहती है। राज्यभर में कोचिंग संस्थान रेलवे के गैंगमैन से लेकर आईएएस अफसर बनाने तक का सपना छात्रों को दिखाता है। अंडर ग्रेजुएट, ग्रेजुएट से लेकर यूपीएससी, स्टेट पीएससी, एसएससी, रेलवे, बैंकिंग, मैनेजमैंट, क्लर्क आदि की प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कराने के अलावा कंप्यूटर कोर्स और इंगलिश स्पीकिंग कोर्स कराने के नाम पर भी कोचिंग संचालक चांदी काट रहे हैं। कोचिंग संस्थानों पर सरकार और कानून का कोई अंकुश ही नहीं है। गोपालपुरा बाईपास और इससे जुडी कॉलोनियों में 100 से भी ज्यादा कोचिंग इंस्टीट्यूट और उनसे जनित 100 से ज्यादा हॉस्टल चल रहे हैं। जिस क्षेत्र को रेजीडेंशियल मान लोगों ने मकान बनाए, वहां कोचिंग इंस्टीट्यूट, हॉस्टल आदि से उनका सुख-चैन छिन गया है। एक कोचिंग में 50 से 500 तक स्टूडेंट हैं, जो कई शिफ्टों में चलते हैं। इससे रिहायशी क्षेत्र में सड़क पर दिनभर और देर रात तक जाम रहता है। टोंक फाटक, गोपालपुरा बरकत नगर, मालवीय नगर, झोटवाडा, प्रताप नगर, बापू नगर, जवाहर सर्किल के आसपास, विद्याधर नगर, वैशाली नगर और लालकोठी, यूनिवर्सिटी मार्ग, मानसरोवर आदि में कुकुरमुत्ते की तरह ये फैल गए है। इन क्षेत्रों में लोगों का जीना दुश्वार हो गया है।

असामाजिक तत्व आये दिन उत्पात मचाते है। गाडियों के शीशे तोड जाते है। चलती महिलाओं के गले से चेन झपटा करते है। यहाँ के निवासियों की शिकायते कहीं भी नहीं सुनी जाने से लोगों में भयंकर आक्रोश है। लगता है हाथ पर हाथ धरे बैठा प्रशासन एक नयी दुखांतिका का इंतजार कर रहा है। गौरतलब है छह माह पूर्व जयपुर शहर में संचालित कोचिंग संस्थानों में सुरक्षा मानकों की जयपुर पुलिस द्वारा सघन जाँच की गई थी जिनमें 65 संस्थानों में सुरक्षा मानकों की अनिमितता पाई गई। इनमें 31 संस्थानों को नोटिस एवं 38 संस्थानों की सील की कार्रवाई की गई। जयपुर में निजी कोचिंग संस्थान में स्टूडेंट्स के बेहोश होने का मामला सामने आने के बाद अब सरकार अलर्ट मोड पर है। पूरे प्रदेश के कोचिंग संस्थानों की खैरखबर शुरू हो गई है। नियमों के प्रतिकूल काम करने वाले संस्थानों पर गाज गिरने की कार्यवाही शुरू हो गई है।

**-अतिथि संपादक,**
**बाल मुकुन्द ओझा**
**वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार**

# राष्ट्रीय संस्कृति नीति की आवश्यकता

**राजेश्वर सिंह**

संस्कृति में किसी भी विशिष्ट भूभाग के जनसामान्य के जीवन मूल्य, विश्वास, विचार, आस्थाएँ, चिन्तन प्रणाली व जीवन शैली समाहित होती और यह साहित्य, संगीत, नृत्य, चित्रकला, स्थापत्य, मूर्तिकला, वस्त्र, आभूषण, आहार व व्यवहार इत्यादि के माध्यम से स्वयं को अभिव्यक्त करती है। स्वातंत्र्योत्तर भारत में संस्कृति के विविध रूपाकारों व आयामों को सुरक्षित, संरक्षित व विकसित करने के लिए सरकारी और निजी स्तर पर बहुविध प्रयास किए गए हैं जिनके अत्यंत सकारात्मक एवं उत्साहजनक परिणाम सामने आए हैं।

आवश्यकता इस बात की है कि भारत के सांस्कृतिक परिदृश्य को और अधिक सक्रिय, समृद्ध समुन्नत व समावेशी बनाने के लिए साहित्य, संगीत, नृत्य, चित्रकला, मूर्ति कला, रंगमंच इत्यादि क्षेत्रों में सुचिंतित व सुविचारित नीति बनाकर आगे बढ़ा जाए ताकि अतीत की गौरवशाली धरोहर का संरक्षण किया जा सके, वर्तमान परिवेश में व्याप्त घृणा, कटुता, वेमनस्य, निराशा, हताशा, अवसाद, अकेलेपन को समाप्त कर आशावाद, आनंद व उत्साहपूर्ण वातावरण का सृजन किया जा सके और इस सकारात्मक विचार व कार्य की आधारशिला पर भविष्य के स्वर्णिम भारत का निर्माण किया जा सके।

स्वतंत्रता के तत्काल बाद भारत में साहित्य अकादमी, संगीत नाटक अकादमी, ललित कला अकादमी तथा नेशनल स्कूल आफ ड्रामा की स्थापना की गई। इसी पैटर्न पर राज्यों में भी सक्षम, सशक्त व सुदृढ़ सांगठनिक संरचनाओं के सृजन की आवश्यकता है जो कि स्वयं से संबंधित गतिविधियों का समन्वित एवं लक्ष्य केंद्रित तरीके से संचालन कर सके। बड़े राज्यों में इन संस्थाओं के संभागीय, क्षेत्रीय अथवा जिला कार्यालय भी स्थापित किया जा सकते हैं। विभिन्न भाषाओं एवं लोक भाषाओं की एक ही साहित्य अकादमी बनाने से अंतर्भाषाई संपर्क, संवाद, समन्वय, सामंजस्य व समृद्ध सृजनशीलता को प्रोत्साहन मिलेगा।

केंद्रीय व राज्य स्तर पर साहित्य, संगीत व कला विश्वविद्यालय तथा जिला स्तर पर साहित्य, संगीत व कला महाविद्यालय स्थापित करने की आवश्यकता है। वर्तमान में विभिन्न विधाओं में पृथक-पृथक कार्यरत शैक्षिणक संस्थाओं को इन विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में सरलतापूर्वक समाहित किया जा सकता है। साहित्य, संगीत व विविध कला रूपों के समन्वित उच्च अध्ययन से न केवल विद्यार्थियों के मानसिक क्षितिज का विस्तार होगा वरन् अंतर अनुशासनिक अध्ययन व अनुसंधान को भी बढ़ावा मिलेगा। आईआईटी आईआईएम एवं एम्स की तर्ज पर साहित्य व संस्कृति के क्षेत्र में करियर बनाने की इच्छुक विद्यार्थियों के लिए उक्त विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय एक वरदान से कम साबित नहीं होंगे।

इसी प्रकार उच्च शिक्षा के विभिन्न डिग्री एवं पोस्ट ग्रैजुएट डिग्री प्रोग्राम के साथ साहित्य, संगीत एवं विविध कला रूपों में डिप्लोमा एवं पोस्ट ग्रैजुएट डिप्लोमा प्रोग्राम को समन्वित किया जा सकता है। विज्ञान, वाणिज्य, प्रौद्योगिकी व प्रबंधन के छात्रों को यदि साहित्य, संगीत अथवा विविध कला रूपों के अध्ययन का अवसर मिलता है तो समग्र शैक्षणिक व सामाजिक परिवेश को उदार, संवेदनशील समरस, सौंदर्यपूर्ण एवं मानवीय बनाने में मदद मिलेगी।

नियमित समयांतराल पर पंचायत, नगर, विकासखंड, जिला राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर संस्कृति महोत्सव का आयोजन एक नई शुरुआत हो सकती है जिसके माध्यम से न केवल साहित्यकारों एवं कलाकारों को अपनी प्रतिभा के प्रदर्शन हेतु सशक्त मंच प्राप्त होगा वरन इन आयोजनों में सक्रिय सहभागिता के माध्यम से आमजन के साहित्यिक, सांस्कृतिक, बौद्धिक एवं वैचारिक उन्नयन का मार्ग भी प्रशस्त होगा। प्राकृतिक, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक धरोहर यथा बावड़ी, सरोवर, झील, नदी, महल, किले, गढ़, हवेलियां, मठ, मंदिर एवं मस्जिद इत्यादि के सर्वेक्षण एवं सूचीकरण का कार्य भी अविलंब पूर्ण किया जाना चाहिए। निजी क्षेत्र की मदद से इस धरोहर की सुरक्षा, संरक्षण व विकास की विस्तृत कार्ययोजना बनानी चाहिए। इन स्थलों तक संपर्क सड़क का निर्माण तथा वहां पर रुकने के लिए पर्यटक विश्रामगृह अथवा होटल का निर्माण सरकार तथा निजी क्षेत्र की प्राथमिकता में होना चाहिए ताकि धरोहर तो संरक्षित रहे ही साथ ही पर्यटन प्रोत्साहन के माध्यम से रोजगार सृजन का साधन भी निर्मित हो सकेगा। टूरिस्ट गाइड के प्रशिक्षण को भी एक औपचारिक, व्यवस्थित एवं संस्थागत स्वरूप देने की आवश्यकता है ताकि पर्यटकों को सही सूचनाएं प्राप्त हो सकें।

भारतीय संस्कृति एवं दर्शन, योग, आयुर्वेद, ज्योतिष, वास्तु शास्त्र तथा शास्त्रीय संगीत में विदेशी पर्यटकों की रुचि रहती है। प्रस्तावित साहित्य संगीत एवं कला विश्व विद्यालय, संस्कृत विश्वविद्यालय एवं आयुर्वेद संस्थानों में इस हेतु अल्पावधि के कार्यक्रम प्रारंभ किया जा सकते हैं ताकि पर्यटकों की उत्सुकता, रुचि व जिज्ञासा को वास्तविक ज्ञानार्जन द्वारा संतुष्ट किया जा सके। इसी प्रकार इन विधाओं में कार्यरत विभिन्न गैर सरकारी संस्थाओं का सरकार द्वारा सूचीकरण एवं अधिप्रमाणन भी किया जा सकता है ताकि पर्यटक ठगे नहीं जावे व उनकी दृष्टि में देश की छवि धूमिल नहीं हो।

राजनेताओं की स्मृति को संरक्षित करने की दिशा में काफी काम हुआ है पर कवि, लेखक, साहित्यकार, कलाकार, वैज्ञानिक, समाज वैज्ञानिक, शिक्षाविद् आदि की स्मृति को भी सुरक्षित एवं संरक्षित करने की महती आवश्यकता है। उनके जन्म स्थान पर उनके नाम से पुस्तकालय, संग्रहालय एवं अतिथि गृह का निर्माण तथा उनकी जयंती व पुण्य तिथि का आयोजन इत्यादि इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम सिद्ध हो सकते हैं। इसके अलावा विभिन्न शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थानों का नामकरण भी उनके नाम पर किया जा सकता है।

भारतीय संघ के प्रत्येक राज्य की राजधानी में राष्ट्रीय इतिहास संग्रहालय का निर्माण किया जाना चाहिए जिसमें पूर्वी, उत्तर पूर्वी, पश्चिमी एवं दक्षिणी भारत के इतिहास, कला, साहित्य, संस्कृति व महापुरुषों को बराबर महत्व मिले एवं प्रत्येक नागरिक इस विशाल महादेश की समृद्ध संस्कृति के निर्माण में विभिन्न क्षेत्रों के विशिष्ट योगदान से सुपरिचित हो सके। एक राष्ट्रीय अनुवाद संस्थान की स्थापना भी की जानी चाहिए ताकि विभिन्न भारतीय भाषाओं के कालजयी साहित्य का दूसरी भारतीय भाषाओं में प्रमाणिक अनुवाद संभव हो सके और इसके माध्यम से अंतरभाषाई संपर्क और संवाद को प्रोत्साहन प्राप्त हो सके।

इसी प्रकार अनेक लोक भाषाएँ एवं लोककलाएँ, जिनमें जनजाति समुदाय की भाषाएँ एवं कलाएँ भी सम्मिलित है, आज विलुप्ति के कगार पर है। यह मानवता की अमूल्य धरोहर है जिसमें जन सामान्य की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक स्मृतियां तथा विराट अनुभव व विपुल ज्ञान की संपदा समाहित है। इनका संरक्षण व विकास भी राष्ट्रीय संस्कृति नीति का आवश्यक एवं महत्वपूर्ण अंग होना चाहिए।

**-राजेश्वर सिंह,**
**आईएएस ( सेवानिवृत्त )**

# बीकानेर की मूंगफली अपने स्वाद के कारण दुनिया के कई देशों के खरीददारों की पहली पसंद

## मंडी व्यापारियों और निर्यातकों को इस बार 1.25 करोड़ बोरियों के उत्पादन की उम्मीद

- **स्वाद और पौष्टिक गुणों के कारण बीकानेर की मूंगफली का चीन सबसे बड़ा खरीददार है**
- **थाईलैंड, वियतनाम, पाकिस्तान, बांग्लादेश, भूटान और श्रीलंका तक जाती है बीकानेर की मूंगफली**

**बीकानेर,** (निसं)। मिट्टी में होने वाली बीकानेर की मूंगफली अपने स्वाद के कारण पूरी दुनिया में खरीदारों की पहली पसंद है। मूंगफली से नमकीन प्रोडक्ट्स बनाने वाली बड़ी कंपनियां बीकाजी, बीकानेरवाला, भीखाराम-चांदमल और हल्दीराम आदि बीकानेर में पैदा हुई मूंगफलियों की डिमांड करती है। बीकानेर जिले में हर साल मूंगफली की लगभग एक करोड़ बोरियों का उत्पादन होता है। एक बोरी का वजन 35 किलोग्राम होता है। इस बार पूरे बीकानेर में रिकॉर्ड उत्पादन हुआ है। ऐसे में मंडी व्यापारियों और निर्यातकों को इस बार 1 करोड़ 25 लाख बोरियों के उत्पादन की उम्मीद है। बीकानेर की मूंगफली का स्वाद और पौष्टिक गुणों के कारण चीन इसका सबसे बड़ा खरीदार है। इसके अलावा यहां की मूंगफली यूरोपीय देशों थाईलैंड, वियतनाम, पाकिस्तान, बांग्लादेश, भूटान और श्रीलंका तक जाती है। दुनियाभर में स्नैक्स बनाने वाली बड़ी कंपनियां बीकानेर की मूंगफली की डिमांड करती हैं।

बीकानेर के मूंगफली निर्यातक बृजमोहन चांडक ने बताया कि जिले में हर साल करीब 1 करोड़ बोरी मूंगफली का उत्पादन होता है। एक बोरी में 35 किलो मूंगफली आती है। पिछले साल तक ये उत्पादन एक करोड़ बोरी तक पहुंचा था। इस बार ये मात्रा बढ़कर सवा करोड़ बोरी तक पहुंच गई है। बीकानेर की अनाज मंडी के साथ ही ऊन मंडी में भी इन दिनों मूंगफली की ढेरियां नजर आ रही हैं। नोखा, लूणकरनसर, श्रीडूंगरगढ़ सहित अन्य ग्रामीण मंडियों में भी हर तरफ मूंगफली ही मूंगफली नजर आ रही है। चांडक ने बताया कि बीकानेरी मूंगफली का सबसे बड़ा खरीदार चीन है। बीकानेर से मूंगफली चीन को एक्सपोर्ट होती है। बीकानेर से प्रोसेसिंग के बाद मूंगफली गुजरात भेजी जाती है। वहां से चीनी व्यापारी मूंगफली की खरीदारी करते हैं। पहले गुजरात के व्यापारी बीकानेर आकर मूंगफली की खरीद करते थे। मूंगफली को गुजरात ले जाकर प्रोसेसिंग यूनिट के जरिए अच्छा दाना निकालकर विदेश सप्लाई करते थे, लेकिन अब बीकानेर में ही एक दर्जन से ज्यादा यूनिट लग गई है। आसपास के इलाके को भी मिला लें तो 100 से ज्यादा प्रोसेसिंग यूनिट्स हो गई है। उन्होंने बताया कि मंडी से निर्यातक बेहतर मूंगफली की खरीद करते हैं। मंडी से मूंगफली प्रोसेसिंग यूनिट में आती है। इसे गोदाम में स्टॉक किया जाता है। मूंगफली की अच्छे से क्लीनिंग की जाती है। मूंगफली के छिलके, कंकर और मिट्टी अलग कर दिए जाते हैं।

चांडक ने बताया कि दानों को पानी में भिगोया जाता है। यह दाने का मॉइश्चर मेंटेन करने के लिए किया जाता है। इसके बाद छिलका अलग किया जाता है। मजदूर हाथ से अच्छे दानों की अलग से छंटाई करते हैं। इसके बाद मशीन से फाइनल छंटाई कर समान बेहतर क्वालिटी के दानों को अलग किया जाता है। यहां से अच्छे दाने की पैकिंग कर माल विदेश भेजा जाता है। हालांकि माल विदेश जाने का रास्ता गुजरात से होकर ही निकलता है, इसलिए प्रोसेस होकर मूंगफली कंटेनरों से गुजरात जाती है। बृजमोहन चांडक ने कहा कि राज्य सरकार अगर कोशिश करे तो बीकानेर की मूंगफली बीकानेर से अलग-अलग पोर्ट के जरिए सीधे विदेश जा सकती है। इससे स्थानीय व्यापारियों को अधिक मुनाफा होगा।

चांडक ने बताया कि देश में मूंगफली उत्पादन के मामले में अब बीकानेर जिला सबसे ऊंचे पायदान पर है। अब तक गुजरात के राजकोट में देश की सर्वाधिक मूंगफली का उत्पादन हो रहा था, लेकिन अब बीकानेर आगे निकल गया है। बीकानेर में पिछले साल 55 लाख क्विंटल मूंगफली उत्पादन हुआ था। इस बार इससे ज्यादा उत्पादन का रिकॉर्ड बनने की उम्मीद है। इस बार राजकोट में कुल उत्पादन 53 लाख क्विंटल रहा है, जबकि बीकानेर में करीब 40-45 लाख क्विंटल का कारोबार हो चुका है। इस बार मूंगफली के बीज, फुटकर विक्रेताओं, ऑयल व गोटा मिलों के जरिए सीधी खरीद 10 से 15 लाख क्विंटल रहने का अनुमान है।

बीकानेर अनाज मंडी के पूर्व अध्यक्ष और व्यापारी मोतीलाल सेठिया ने बताया कि बीकानेर में नई अनाज मंडी गंगानगर रोड पर है। दीपावली के बाद से मंडी में मूंगफली की आवक शुरू हो जाती है। शुरू में आवक धीमी होती है। लेकिन अब एक लाख बोरियों का ऑक्शन रोजाना हो रहा है। मंडी में सवा लाख बोरियां तक रोजाना आ रही हैं। लगभग 25 हजार बोरियां ऑक्शन से छूट जाती है। इन्हें अगले दिन ऑक्शन में शामिल किया जाता है। मंडी में किसानों को मूंगफली लाने और बेचने में कोई दिक्कत न हो, इसके लिए सुबह 5 बजे से रात 11 बजे तक मंडी के सभी गेट खुले रहते हैं। इस बार बारिश अच्छी रही। मूंगफली की गिरी (दाना) गुलाबी है। यह अच्छी क्वालिटी की पहचान है। इस बार खेतों में मूंगफली की 8 से 12 क्विंटल प्रति बीघा पैदावार हो रही है। बीकानेर में तेल और दाने की 100 से अधिक मिले हैं। इन दिनों पाकिस्तान, बांग्लादेश, श्रीलंका और भूटान से डिमांड कम आ रही है। इसकी वजह पड़ोसी देशों से भारत के संबंधों में आ रही तल्खी हो सकती है। हालांकि यूरोपीय देशों, चीन और मलेशिया से डिमांड बनी हुई है। सर्दी बढ़ने के साथ डिमांड भी बढ़ेगी।

बीकानेर के खाजूवाला के किसान नरेंद्र आर्य ने बताया कि जिले में बीकानेर, खाजूवाला, लूणकरणसर, श्रीडूंगरगढ़, नोखा, बज्जू क्षेत्र में मूंगफली की खेती होती है। जिले में मूंगफली के बुवाई क्षेत्र की बात करें तो साल 2022-23 में 2 लाख 73 हजार हेक्टेयर में किसानों ने बुवाई की थी, जबकि साल 2023-24 में 2 लाख 80 हजार हेक्टेयर में बुवाई की गई। इस तरह बुवाई क्षेत्र में 7 हजार हेक्टेयर की बढ़ोतरी रही। समय पर बारिश, कीट या व्याधि का प्रकोप न होने के कारण इस सीजन में प्रति हेक्टेयर डेढ़ से दो क्विंटल उत्पादन बढ़ा है। इस बार मानसून में बीकानेर के ग्रामीण क्षेत्रों में जमकर बारिश हुई। कोलायत, श्रीडूंगरगढ़, नोखा व खाजूवाला क्षेत्र में अच्छी बारिश रही। नहरी पानी ने भी पूरा साथ दिया। ऐसे में किसानों ने समय पर मूंगफली की बुवाई की। परिणाम ये है कि मंडियों में मूंगफली रखने की जगह नहीं है।

# महात्मा गांधी इंग्लिश मीडियम स्कूलों में छात्र-शिक्षक अनुपात बिगड़ा

- **राज्य के महात्मा गांधी इंग्लिश मीडियम स्कूलों को अभी तक अंग्रेजी में ट्रेंड शिक्षक नहीं मिले**
- **ज्यादा खराब स्थिति ग्रामीण क्षेत्र के इंग्लिश मीडियम स्कूलों की है**

**बीकानेर,** (निसं)। छात्राओं की अर्द्धवार्षिक परीक्षा अगले सप्ताह खत्म होने वाली है, लेकिन राज्य के महात्मा गांधी इंग्लिश मीडियम स्कूलों को अभी तक अंग्रेजी में ट्रेंड शिक्षक नहीं मिले हैं। सरकारी इंग्लिश मीडियम स्कूलों को शिक्षक नहीं मिलने से इन स्कूलों में छात्र-शिक्षक अनुपात गड़बड़ा गया है। ज्यादा स्थिति खराब ग्रामीण क्षेत्र के इंग्लिश मीडियम स्कूलों की है।

जानकारी के अनुसार राज्य सरकार की ओर से पिछले छह साल में हिंदी मीडियम से 3737 स्कूलों को इंग्लिश मीडियम में रूपांतरित किया गया है, लेकिन इन स्कूलों में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों को ना तो ट्रेंड टीचर मिले ना ही इंफ्रास्ट्रक्चर। बीकानेर जिले के इंग्लिश मीडियम स्कूल जसनाथपुरा, कतरियासर और बंदा स्कूल में सिर्फ दो छात्रों का ही नामांकन है। वहीं महात्मा गांधी इंग्लिश मीडियम स्कूल बरसिंगसर में भी नामांकन कम होने से पहली से 8वीं कक्षा में दो सेक्शन से एक सेक्शन कर दिया गया है। इंग्लिश मीडियम स्कूल मोतीगढ़ में भी सिर्फ 21 बच्चों का नामांकन है। यह हालत केवल एक-दो स्कूलों के नहीं है, बल्कि ग्रामीण क्षेत्र के अधिकांश स्कूलों में निर्धारित सीटों से कम विद्यार्थियों का प्रवेश हुआ है। इस शिक्षा सत्र में महात्मा गांधी इंग्लिश मीडियम स्कूलों में दाखिले के लिए मई-जून में ऑनलाइन आवेदन लिए गए थे। प्रवेश के लिए ऑफलाइन आवेदन की प्रक्रिया इस बार नहीं अपनाई गई। ग्रामीण क्षेत्र के अधिकांश अभिभावक ऑनलाइन प्रक्रिया को समझ नहीं पाए, इस कारण आवेदन भी निर्धारित सीटों से कम हुए। नतीजा अनेक स्कूलों में सीटें रिक्त रह गई। महात्मा गांधी इंग्लिश मीडियम स्कूलों में शिक्षकों के रिक्त पदों को भरने के लिए शिक्षा विभाग ने 25 अगस्त को स्टाफ चयन परीक्षा आयोजित की। परीक्षा में 79 हजार से अधिक शिक्षकों ने आवेदन किया, लेकिन बोनस अंकों का विवाद न्यायालय में होने के कारण अभी तक परीक्षा का रिजल्ट घोषित नहीं हुआ है।

## राशिफल

**पंडित अनिल शर्मा**

### शनिवार 21 दिसम्बर, 2024

पौष मास, कृष्ण पक्ष, षष्ठि तिथि, शनिवार, विक्रम संवत 2081, पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र रविवार प्रात: 6:14 तक, प्रीति योग सायं 6:22 तक, वणिज करण दिन 12:22 तक, चन्द्रमा आज सिंह राशि में संचार करेगा।

**ग्रह स्थिति:** सूर्य-धनु, चन्द्रमा-सिंह, मंगल-कर्क, बुध-वृश्चिक, गुरू-वृष, शुक्र-मकर, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज रवियोग रविवार प्रात: 6:14 तक है। आज भद्रा दिन 12:22 से रात्रि 1:27 तक रहेगी। आज सायन मकर में सूर्य प्रवेश दिन 2:51 पर होगा। आज से सूर्य उत्तरायण आरम्भ होगा। आज से शिशिर ऋतु आरम्भ होगी।

**श्रेष्ठ चौघड़िया:** शुभ 8:33 से 9:50 तक, चर 12:25 से 1:42 तक, लाभ-अमृत 1:42 से 4:17 तक।

**राहूकाल:** 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 7:16, सूर्यास्त 5:34

**मेष**

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक सफलता से आत्मविश्वास बढ़ेगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

**वृष**

घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

**मिथुन**

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। आज धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों के कारण बाहर जाना पड़ सकता है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

**कर्क**

आज स्वभाव की तेजी पर नियंत्रण रखें। व्यावसायिक मामलों में संयम रखना ठीक रहेगा। वाणी पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

**सिंह**

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। नवीन व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

**कन्या**

आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है। धन हानि का भय है। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि होगी। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

**तुला**

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा।

**वृश्चिक**

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

**धनु**

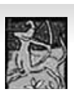

व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाना पड़ सकता है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ रहेगी। आज शुभ कार्यों में व्यवधान उत्पन्न हो सकते हैं। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

**मकर**

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। परिवार में व्राद-विवाद टालना ठीक रहेगा।

**कुंभ**

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

**मीन**

व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। नवीन कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा।